

100

100

# स्वस्थ-अध्ययन

[ विमल प्रनोत्तर-रत्नमाला तथा गौतम डुनकम् ]



— सम्पादक —

जैनाचार्य पूज्य श्री जयमलजी महारान  
के सम्प्रदाय के स्वर्गीय श्रद्धेय  
स्वामीजी श्री जोरानरमलजी  
महारान के सुशिष्य  
प०रत्न मुनिश्री मिश्रीमलजी  
महारान ( मधुकर )  
न्याय-साहित्यतीर्थ



प्रकाशक —

मन्त्री श्री आत्म जागृति कार्यालय  
व्यावर (राज )

प्रथमावृत्ति  
१०००

}

मू० व ३०) आन

{

वी स० १४७८  
सम्पन्न २ ०७

मुद्रक

श्री जालमसिंह के प्रबन्ध से  
श्री गुग्गुलु प्रि० प्रेस, व्यावर में मुद्रित

# समर्पण

---



उन सभी सात्विक जीवन

के

अभिलाषियों को

—मधुकर

## दो शब्द



प्रस्तुत पुस्तक में छोटे छोटे दो ग्रन्थों का सम्पादन किया गया है। पहला ग्रन्थ का नाम है 'विभिन प्रश्नोत्तर रत्न माला' है और दूसरे ग्रन्थ का नाम 'गौतम कुलवृक्ष' है।

ज्ञाना ग्रन्थों में सचित पाठ्य सामग्री जीवन को स्वस्थ बना कर आत्मा को ऊँची उठान वाली है।

पाठक 'स्वस्थ अध्ययन' को पढ़कर सच्चा स्नातक बन जायें। धन ! यही मेरे हृदय की एक मात्र अभिलाषा है।

रत्नाग्रथन  
सम्बन्ध २००६  
तीनरी मारवाड़ }  
}

## प्रस्तावना



मानव जीवन का चरम लक्ष्य क्या है जिसे प्राप्त करके मनुष्य मर्त्य के लिए कृतार्थता का अनुभव कर सके ? यह एक ऐसा प्रश्न है जो प्रत्येक विचारशील मनुष्य के चित्त में उत्पन्न हुआ करता है किंतु जिसका सर्व सम्मत समाधान आज तक मनुष्य जाति को उपलब्ध नहीं हो सका है। इस और से इस प्रकार के अन्य प्रश्नों के समाधान से निराश हो कर मनुष्य जब यथार्थान आता है स्वस्थ होता है तो पता चलता है कि उसे इस माथापच्ची में से एक ही निष्कर्ष मिला है और वह यह कि जीवन को धर्म और नीति के पथ पर अग्रसर करते जाना चाहिए। यही जीवन की अंतिम स्थिति को प्राप्त करने का एक मात्र उपाय हो सकता है।

यद्यपि ससार में धर्म-पथ अनेक हैं और साधारण व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं है कि वह यह निर्णय कर सके कि वास्तव में किस पथ पर अग्रसर होने से परम कल्याण की प्राप्ति हो सकती है। फिर भी तनिक शांत और उदार भाव से अगर विचार किया जाय तो प्रतीत होगा कि धर्म का एक सामान्य तत्त्व सभी पंथों में समान है और हम यदि उस तत्त्व तक पहुँच गये तो हमें अग्रय शान्ति की प्राप्ति होगी। वह तत्त्व है नीति। जिसका जीवन नीतिमय बन जायगा, उसे अनायास ही धर्मपथ सूझने लगेगा। यही कारण है कि भारतीय साहित्य में नीति का निरूपण करने वाला साहित्य बहुत विपुल है।

नीति के भी अनेक रूप हैं। यह भी कहा जा सकता है कि नीति, शब्द का प्रयोग बहुत व्यापक और विविध अर्थों में हुआ है। फिर भी हम उसे दो भेदों में अन्तर्गत कर सकते हैं—( १ ) व्यवहार नीति और ( २ ) धर्मनीति। उपर जिस नीति का उल्लेख किया गया है वह व्यवहारनीति नहीं, धर्म नीति है। धर्मनीति आत्मधर्म की प्राथमिक भूमिका है, जिसके उपर धर्म का विशाल और मजबूत आसामें खड़ा है। व्यवहार नीति एक कुशलतापूर्ण दम मात्र है जिससे अपना मतलब गाठने में सुविधा होती है।

अगर वृद्ध की अपेक्षा उसका जड़ का महत्त्व अधिक हो और सुन्दर महन की अपेक्षा उसकी नींव की प्रतिष्ठा कम न हो तो यह भी कहा जा सकता है कि धर्म की अपेक्षा धर्मनीति की महिमा भी अधिक ही है।

प्रस्तुत पुस्तक में धर्मनीति का ही निष्पण किया गया है। यद्यपि यह कृत्रिम है कलश्वर उसका बड़ा नहीं है, फिर भी उसमें जो कुछ है, उसका महत्त्व बहुत अधिक है। सचित्त भाषा सविमल भाषा प्रकट किये गये हैं। 'गागर में सगर' भर देने की उक्ति यहाँ पूरी तरह चरितार्थ होती है।

इस पुस्तक में दो रचनाएँ संग्रहित हैं—( १ ) विमल प्रश्नोत्तर रत्नमाला और ( २ ) गीतम कुलक। प्रश्नोत्तर की शैली में इनकी रचना हुई है और इनमें प्रदर्शित किये हुए विचार अन्यत्र सुन्दर तथा जीवनोपयोगी हैं। महान् धर्मनीति के प्रश्नों का निचोड़ इनमें दिया गया है। विमल प्रश्नोत्तर रत्नमाला के कर्ता ने बिलकुल यथार्थ ही कहा है कि जो इस ग्रन्थ को कठस्थ कर लेगा वह अवश्य ही सम्प्र समुदाय में आदर का पात्र बनेगा।

यद्यपि उक्त दानां प्र य पहले भी प्रकाशित हुए हैं, किंतु उनका ऐसा सुन्दर और उपयोगी संस्करण पहले देखने में न आया। इसके अनुवादन और सम्पादन का श्रेय विद्वद्भर प० मुनिश्री मिश्रीमन्मजी महाराज 'मधुकर' का है। उन्होंने अनेक प्रतिभूत परिस्थितियों में सं गुचने हुए भी काफी धम ठा कर इस संस्करण को तैयार किया है। उनके द्वारा सम्पादित अथ तीन रचनाएँ अभी अभी प्रकाशित हुई हैं और यह चौथी रचना है। आधुनिक लोग मानस के अनुकूल जो सामग्री, मुनिश्री ने उपस्थित की है, उसमें पाठकों को बहुत लाभ पहुँचेगा ऐसी आशा है।

हार्दिक कामना है कि मुनिश्री साहित्य सेवा में अधिक अपसर हाँ और एक व्यवस्थित प्रथमाला के रूप में प्राचीन रचनाओं को अयाचीन रूप देकर जनता के क्याण का पथ प्रशस्त करें। प्रस्तुत रचना के लिए हम पाठकों की ओर से मुनिश्री का धन्यवाद करते हैं।

श्री जैन गुरुकुल, ग्यावर

ता० ३१-७-४०

श्रीमाचन्द्र भारिष्ठ





# श्रीमान् प्रेमराजजी साहिब श्रीश्रीमाल

## जीवन-चरित्र

आप तीबरी के ख्यात समाज के एक अग्रगण्य नेता हैं। दुग (सी० पी०) में आपकी रावतमल हरातमल के नाम से बहुत अच्छी पेड़ी चल रही है। आपकी इस पेड़ी में तीन भागीदार हैं। एक तो आप स्वयं और दो आपकी दो बड़े भाइयों के लड़के—भैरवलालजी और नमिन्द्रजी। श्रीमान् श्रीश्रीमालजी ने अपनी पेड़ी की छार में इस पुस्तक के प्रकाशनार्थ २००) रुपये दिये हैं। एतदय धन्यवाद।

—प्रकाशक



रवस्थ अध्ययन

श्रीमान प्रेमराजजी सा० श्रीश्रीमाल



[ आपका जीवन परिचय सामने के पृष्ठ पर दृष्टिगोचर । ]



\* एमोत्यु ए तस्म समणस्स भग्गवओ महावीरस्स \*

# स्वस्थ-अध्ययन



❀ विमल प्रश्नोत्तर-रत्नमाला ❀



क्रिष्णपादेयम् ?

गुरुयचनम् ।

---

( १ )

प्रणिपत्य चर्धमान, प्रश्नोत्तररत्नमालिका वक्ष्ये ।  
नाग-नरामर-चर्ध, देव देवाधिप वीरम् ॥

( २ )

फ. एतु नाऽस्तक्रियते, दृष्टाऽदृष्टार्थ-साधन-पटीयान् ।  
कण्ठस्थितया विमल-प्रश्नोत्तर-रत्न-मालिकया ॥

( ३ )

भगवन् ! किमुपादेय,  
गुरुवचन द्वेयमपि च किमकार्यम् ।  
को गुरुरधिगत-तत्त्वः,  
सत्यहिताऽभ्युद्यत सत्ततम् ॥

( ४ )

त्वरित कि कर्चन्य,  
विदुषा ससारसततिज्ज्ञेद ।  
किं मोक्ष-तरोर्गोत्र,  
सम्यग्ज्ञान क्रियासहितम् ॥

( १ )

मैं देव, दानव और मनुष्य द्वारा वदित देवाधिदेव भगवान् महावीर को नमस्कार करके प्रश्नोत्तर रत्नमाला का वर्णन करता हूँ।

( २ )

ऐसा कौन मनुष्य है जो हम विमल 'प्रश्नोत्तर रत्नमालिका' को कठस्थ करके—अपने कंठ में धारण करके प्रत्यक्ष-परोक्ष अर्थों का ज्ञाता होकर सुशोभित नहीं हो जायगा ? ( जैसे रत्नों की माला को कंठ में धारण करने वाला पुरुष अलङ्कृत होता है, उसी प्रकार इस प्रश्नोत्तर रत्नमाला को कठस्थ करने वाला पुरुष भी अवश्य ही अलङ्कृत होगा । )

प्रश्न :—

उत्तर :—

( ३ )

भगवन् ! उपादेय क्या है ?

गुरु के वचन ।

हेय क्या है ?

बुरे काम ।

गुरु कौन है ?

तत्त्वज्ञानी और सदैव प्राणिमों के हित में तत्पर रहने वाला ।

( ४ )

विद्वान् को किस कार्य में

ससार के प्रवाह को नष्ट करने

शीघ्रता करनी चाहिए ?

में ।

मोक्षरूपी वृक्ष का बीज क्या है ?

सदाचार से युक्त सम्यग्ज्ञान ।

( ५ )

क पथ्यतरो धर्म, क शुचिरिह यस्य मानस शुद्धम् ।  
क पण्डितो विवेकी, किं विषमवधीरणा गुरुषु ॥

( ६ )

किं ससारे सार, बहुशोऽपि विचिन्त्यमानमिदमेव ।  
मनुष्येषु दृष्ट-तत्त्व, स पर-हितायोद्यत जन्म ॥

( ७ )

मदिरैव मोह-जनक, स्नेह-केच दस्यवो विषया ।  
का भववल्ली वृक्षा, को वैरी नन्वनुद्योग ॥

( ८ )

कस्माद्भयमिह मरणादन्धादपि को निशिष्यते रागी ।  
क शूरो यो ललना-लोचनमार्णव च व्यथित, ।

प्रश्न.—

उत्तर.—

( ५ )

अत्यन्त हितकर वस्तु क्या है ?	वर्म ।
इस ससार में पवित्र कौन है ?	शुद्ध हृदय वाला ।
पण्डित कौन है ?	विवेकशील ।
विप क्या है ?	गुरुजना का अनादर करना ।

( ६ )

ससार में सार वस्तु क्या है ?	अपन तथा पराये हित के लिए सदैव तत्पर रहने वाला अपना जीवन ।
------------------------------	---

( ७ )

इस ससार में मदिरा के समान मूर्च्छित करने वाली वस्तु क्या है ?	आसक्ति ।
लुटेरे कौन हैं ?	सामारिक विषयभोग ।
जन्म मरण कराने वाली शक्ति कौनसी है ?	तृष्णा ।
मनुष्य का शत्रु कौन है ?	अस्मरणता ।

( ८ )

इस ससार में प्राणी को किससे अधिक भय होना है ?	मरण से ।
अधे से भी बढ़कर अधा कौन है ?	समार की वासनाओं में आसक्ति रखने वाला ।
शूरवीर कौन है ?	जो स्त्री के नेत्र धाण से व्यथित न होता हो ।



( ६ )

पातु कर्णाञ्जलिभिः, किममृतमिदं बुध्यते सदुपदेशः ।  
किं गुरुताया मूलं, यदेतदप्रार्थनं नाम ॥

( १० )

किं गहनं स्त्री चरितं, कश्चतुरो यो न खण्डितस्तेन ।  
किं दारिद्र्यममन्तोषं, एव किं लाघवं याश्वा ॥

( ११ )

किं जीवितमनघं, किं जाग्रदप्यनम्यासः ।  
को जागर्ति विवेकी, वा निद्रा मृदता जन्तो ॥

( १२ )

नलिनी-दल-गत-जल-लव-तरल किं यौवनं धनमथायुः ।  
के शशधर-कर-निकरानुकारिणः सज्जना एव ॥

प्रश्न :—

उत्तर :—

( ६ )

कर्णाञ्जलि द्वारा अमृत के

समान पीने योग्य वस्तु क्या है ? सदुपदेश !

गौरव का मूल क्या है ?

किसी से याचना न करना ।

( १० )

किसका पार नहीं पाया

जा सकता ?

स्त्री के विदग्धनामय चरित्र का ।

धतुर कौन है ?

जो स्त्री के चरित्र से विचलित  
न होता हो ।

दरिद्रता किसे कहते हैं ?

असन्तोष ही दरिद्रता है ।

लघुना (ओझापन) क्या है ?

किसी से माँगना ही लघुता है ।

( ११ )

जीवन क्या है ?

पापरहित जीवन ही सच्चा  
जीवन है ।

जड़ता क्या है ?

बुराई होते हुए भी अभ्यास  
न करना ।

कौन जागता है ?

विनकशील ।

निद्रा किसे कहते हैं ?

मूढ़ता ही निद्रा है ।

( १२ )

कमल के पत्ते पर लटकते हुए

जलविन्दु के समान धञ्जल

क्या है ? यौवन, धन और आयु ।

( १३ )

को नरक, परवगता,  
 किं सौख्य सर्व सद्ग-विरतिर्या ।  
 किं सत्य भृतहितम्,  
 किं प्रेयः प्राणिनामसर्वः ॥

( १४ )

किं दानमनाकाच,  
 किं मित्र यद्विपर्वयति पापात् ।  
 कोऽलङ्कार शील,  
 किं वाचा मण्डन सत्यम् ॥

( १५ )

किमनर्थ-कर मानस-  
 भसङ्गत का गुणारहा मैत्री ।  
 सर्व-ज्यसन विनाशे,  
 को दक्ष सर्वथा त्याग ॥

( १६ )

कोऽन्धो यो ऽकार्यं रतः,  
 को बधिरो यः शृणोति न हितानि ।  
 को मूर्खो यः काले,  
 प्रियाणि वक्तुं न जानाति ॥

प्रश्न —

उत्तर —

( १३ )

नरक क्या है ?

पराधीनता ।

सुख क्या है ?

सम्यक् अनासक्ति ।

मित्र क्या है ?

प्राणियों की मलाद्वय करने वाला

यात्री मत्त है ।

प्राणी का समार म कान मी

अपने अपने प्राण ।

उन्मु प्यारा है ?

( १४ )

धन्य दान क्या है ?

निष्काम भाव से दिया हुआ दान ।

महा मित्र कौन है ?

पाप से उचाने वाला ।

महा आभूषण क्या है ?

शील ।

पाशा की शोभा किम्वद है ?

सत्य भाषण में ।

( १५ )

अनर्थकारी धनु क्या है ?

हृदय की दुविधा ।

सुखकर धनु क्या है ?

मित्रता ।

समस्त दुःखा का विनाश करने

लग्न के प्रति निरक्त ।

में चतुर कौन है ?

( १६ )

अधा कौन है ?

धुर कामा म लिप्त रहने वाला ।

यहिरा कौन है ?

जो हित की बात नहा सुनता ।

गूगा कौन है ?

जो समय पर प्रिय बोलना

नहा जानता ।

( १७ )

किं मरणं मूर्खैः,  
 किं चानर्थं यन्मृतरे दत्तम् ।  
 आमरणं किं शल्यं,  
 प्रच्छिन्नं यत्कृत-मवायम् ॥

( १८ )

कुत्र विधेयो यत्नो,  
 विद्याऽभ्यासे मर्त्येषु नत ।  
 श्रवणीरक्षा क्व क्वया,  
 सुखं परं षोडश्वर धनपु ॥

( १९ )

काऽहर्निश-मनुचिन्त्या,  
 यमाराऽपारता न च प्रमत्ता ।  
 का प्रेयसी विधेया,  
 कुरुषा नक्षिणमपि च मैत्री च ॥

( २० )

नष्ट-गति-रप्यसुखि  
 कस्याऽऽमा नो ममर्ष्यते जातु ।  
 मर्त्यस्य विषादस्य च  
 गर्भस्य तथा कृतघ्नस्य ॥

प्रश्न —

उत्तर —

( १७ )

मरण क्या है ?

अन्तमोल यन्तु क्या है ?

साधन धन्य शूल की भौति

मरण क्या है ?

मृत्युता ।

ममय पर दिया हुआ दान ।

द्विपात्र किया गया अकार्य

अर्थात् गुप्त पाप ।

( १८ )

किमरु लिङ्ग सदा प्रयत्न करना  
चाहिए ?

किमरु तिरस्कार करना  
चाहिए ?

विद्याभ्यास और औपचारिक  
लिङ्ग

दुर्जन का मगसि, पर स्त्री और  
पर धन का

( १९ )

रात दिन किमरु चिन्तन  
करना चाहिए ?

प्रियतमा रिम बनार्थ ?

ममर की असारता का, कि  
स्त्री का नहीं

कल्याण, चतुरता और मित्र  
को

( २० )

प्राणा व कण्ठ तक ध्यान पर  
भा किमरु आत्मा मे सुधार  
नहीं हो पाता ?

मूर्ख, चिन्तातुर, आभिमानि  
कृतज्ञ की आत्मा नहीं सुधार

( २१ )

न पूज्य मद्भूत ,  
 कमधम-माचक्षते त्वमद्भूतम् ।  
 केन नित जगदेतत्,  
 मत्प-तितित्वागता पुता ॥

( २२ )

नस्मै नम सुरैरपि,  
 सुतरा क्रियते दया प्रधानाय ।  
 नस्माद्-द्विजितव्य,  
 मसारा-रखयत मुधिया ॥

( २३ )

नस्य वगे प्राणिगण ,  
 मत्प प्रिय-भाषिणा निर्नीतस्य ।  
 क स्थातव्य न्याग्ये,  
 पथि ष्टाऽष्ट-लाभाऽऽदरे ॥

( २४ )

निघुब्धिलसित चपल,  
 कि दुर्जन मद्गत सुमतयश्च ।  
 इल गल-निष्प्ररम्भा ,  
 के कलिकालेऽपि मत्पृष्ठा ॥

प्रश्न —

उत्तर —

( २१ )

पूतनीय कौन है ?

सदाचारी ।

अधम किम कहत हैं ?

आचारहीन व्यक्ति ही अधम हैं ।

जिस चरित का चीतने वाला

सत्यनिष्ठ और नमशील ।

कान है ?

( २२ )

डेयता भा जिसको निरन्तर

न्यायान को ।

नमस्कार करते रहते हैं ?

विद्वान को किमम डरना

समाज की सत्य सत में ।

चाहिए ?

( २३ )

प्राणी किमक वश म हो जात हैं ?

सत्यवक्ता, प्रियभापी और

विनीत व्यक्ति क ।

किम पर पर स्थिर रह ?

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभ

दायक न्याय क मान पर ।

( २४ )

विजली के समान अस्थिर तथा

तृजना की मगति और युक्तियाँ

अचल कौन है ?

कलिकाल म भी पयत क

मत्पुरुष ।

समान अचल कौन है ?



( २५ )

किं शोच्य कार्पण्य,  
 मति विमये किं प्रशम्यमोदार्पम् ।  
 ननुतर प्रित्तस्य तथा,  
 प्रमविष्णोर्यन्महिष्युत्तरम् ॥

( २६-२७ )

चिन्ता मणिरिव दुर्लभ—  
 मिदं किं कथमपि च ननु चतुर्भद्रम् ।  
 किं नद्वदन्ति भूयो,  
 विधृत-तमसो विगर्षम् ॥  
 दान प्रिय राक् महितम्,  
 ज्ञान भगवन् वमान्वित शौर्यम् ।  
 त्याग-मदित च प्रित्त,  
 दुर्लभ-मतचतुर्भद्रम् ॥

( २८-२९ )

इति कण्ठगता विमला प्रश्नोत्तररत्नमालिका येषाम् ।  
 त मुक्तामरणा अपि विमान्ति विद्वत्समाजेषु ॥  
 रचितः गितपटुगुह्या विमला विमलेय रत्नमालेय ।  
 प्रश्नोत्तरमालेय कण्ठगता क न भूषयति ॥

प्रश्न —

उत्तर —

( २५ )

शासनोप रथा है ?

कृपणता ।

रैभय क होने पर प्रशमनीय  
क्या है ?

उदारता ।

अनहीन दान तथा अधिकार  
पान पर प्रशसनीय क्या है ?

महनशीलता ।

( २६-२७ )

इस मसार म चिन्तामणि क  
समान तुलभ वस्तु रथा है ?

चार वस्तुएँ तुलभ हैं, और  
इस प्रकार हैं —मीठी भाषा  
साध दान, अभिमान रति  
ज्ञान, समा युक्त नीरता स  
याग युक्त धन ।

( २८-२९ )

इस निमल प्रश्नोत्तर रत्नमाला को जो फटकर कर लेने हैं  
विद्वान व समूह मे आभरणा के बिना भी शोभा पात २ ।

इतिहास्यर गुरु क द्वारा बनाई हुई निमल रत्ना की माला  
समान यह निमल प्रश्नोत्तर रत्नमाला कठ म धारण कर लन पर  
कण्ठस्थ कर लेने पर, किसकी शोभा नहीं बढ़ती ?

त्रिवेक जागृत होने से राज्य का त्याग करने वाल राजा अ  
यप न यह रत्नमाला रथा है । यह विद्वानों के लिए सुन्दर आभूषण

विज्ञान-कनराजवन राजेंद्र रत्नमालिका । रत्नोद्भाषण सुविधा मन्त्रालय



गौतम कुलकम्

किं अमय ? ( अमृतम् )

अहिसा

( १ )

लुद्धा नरा अन्धपरा हवति,  
 मृग नरा काम-परा हवति ।  
 शुद्धा नरा सतिपरा हवति,  
 मिस्मा नरा तिस्मिन् आयरति ।

( २ )

त पडिया जे निरया चिरोहे,  
 ते साहुणो ने ममय चरति ।  
 त मच्छियो जे न चलंति घम्मा,  
 ते बधना जे वमणे हवति ।

( ३ )

मोहाभिभूया न सुह लहति,  
 माणमिणो मौपपरा हवति ।  
 मायाविणो हुति परस्स पेस्मा,  
 लुद्धा महिच्छा नरय उविति ।

( ४ )

कोहो निस कि अमय अहिमा,  
 माणो अरी कि द्वियमप्यमाथा ।  
 माया भय कि मरण तु मच्च,  
 लोहो दुह कि सुहमा तुट्ठी ।

( १ )

लोभा मनुष्य धन यमान में ही लग रहत हैं ।  
मूढ मनुष्य भोग विलासों में फँसे रहते हैं ।  
पंडित लोग क्षमा में ही रमण करत रहत हैं ।  
मध्यम श्रेणी व व्यक्ति जनोपाजन, भाग विलास तथा क्षमा तीनों  
ही में समयानुसार लग रहते हैं ।

( २ )

विराट में अलग रहन वाले व्यक्ति ही पंडित कहलात हैं ।  
राग-द्वेष से रहित समभावपूर्वक शास्त्र की आज्ञानुसार चलन  
वाले ही मायु हैं ।  
रम पर दृढ़ रहन वाले व्यक्ति ही शक्ति सम्पन्न मान गय हैं ।  
आपत्ति में साथ देने वाले ही बाधु कहलात हैं ।

( ३ )

जोधी मनुष्य सुखी नहीं रह सकते ।  
अत में अभिमानियों को पश्चात्ताप करना पड़ता है ।  
कपट चाल रचन वाले व्यक्ति अत में पराधीन बन जाते हैं ।  
लोभी और अत्यंत आमत व्यक्ति आतिर नरक के निधासी जनजात हैं ।

( ४ )

प्रश्न —

उत्तर —

विष क्या है ?	बाध ।
मर्चा अमृत क्या है ?	अहिंसा ।
वास्तविक शत्रु कौन है ?	अभिमान ।
हित क्या है ?	प्रमाद रहित होना ।
हम भय किससे मानना चाहिये ?	माया से ।
मर्चा शरण क्या है ?	सत्य ।
वस्तुतः दुःख की उत्पत्ति किससे होती है ?	लोभ से ।
मर्चा मुख क्या है ?	सन्तोष ।

( ५ )

उद्धी अचट मयण रिणीय,  
 बुद्ध उमील मयण अविर्त्ता ।  
 मभिन्नचित्त मया अलच्छी,  
 मचे ठियत मयण सिरी य ।

( ६ )

चयति मित्ताणि नर रयम्भ,  
 चयति पागाईं मुणिं जयत ।  
 चयति मुक्खाणि मराणि हमा,  
 चयेद उद्धी वुणिय मणुस्म ।

( ७ )

अरोइएन्था र्हिण विलाया,  
 अमपहार र्हिण विलायो ।  
 विक्किरत्तचित्ते र्हिण विलायो,  
 न उमिस्म र्हिण विलायो ।

( ८ )

दुद्धादिना दहपरा हवति,  
 पिआदरा मनपरा हवति ।  
 मुक्खा नरा मोनपरा हवति,  
 सुमादुणो नचपरा हवति ।

( ५ )

साम्य स्वभाव वाले और विनम्र व्यक्तियों के पास बुद्धि मद्धा  
निगम करती है ।

गौधी और दुराचारी मनुष्य अपयश के भागी होते हैं ।

चपल रिक्त वाले क घर दरिद्रता निगम करती है ।

लक्ष्मी सत्य पर हठ रहने वाले की दाम्नी है ।

( ६ )

कृतघ्न मनुष्य का साथ मित्र भी छोड़ देते हैं ।

चित्तेन्द्रिय मुनि पापों से मुक्त हो जाते हैं ।

( जिस प्रकार ) हम सूते हुए सरोवरों को छोड़कर चल जाते हैं

( उसी प्रकार ) बुद्धि गौधी मनुष्य का साथ छोड़ देती है ।

( ७ )

ये चार बातें विलापरूप ( अरह्य रोदन ५ समान ) हैं —

अतिवृद्धा से बात सुनने वाले को परमाथ की बात करना ।

स्वार्थी को परमार्थ का उपदेश करना ।

जोबाहोल रिक्त वाले को समझाना ।

बुशिश्र को अनेक प्रकार की शिक्षाएँ देना

( ८ )

नृशम नरश प्रजा को पीड़ा पहुँचाने में लग रहते हैं ।

विद्याधर मन्त्र माधना में लगे रहते हैं ।

मूर्खा का समय मोघ करने में धीतता है ।

नृशम साधु सदा नन्द्य की ग्योन में लगे रहते हैं ।



( ६ )

मोहा भव उमातरम्म सती,  
 ममाहिचोगा पममम्य माहा ।  
 नाग मुक्कण चरणम्म मोहा,  
 सीमम्म मोहा दिण्ण परिणी ।

( १० )

अभूमणो माहड वमचारी,  
 अक्खिचरो माहड टिक्कधारी ।  
 पुद्धिजुयो मोहड राजमती,  
 लज्जापुत्रो साहड ण्ण—पत्ती ।

( ११ )

अप्पा अरी हा ( ग्यो ) अणउट्टियस्म,  
 अप्पा जमो मीलित्तो नरम्म ।  
 अप्पा दरप्पा अणउट्टियस्म,  
 अप्पा जियप्पा सग्ग गइ अ ।

( १२ )

न धम्म-वज्जा परमत्थि कज्ज,  
 न पाणि हिंसा परम अक्कज्ज ।  
 न पेमरागा परमत्थि चघो,  
 न बोहिलाभा परमत्थि लाभो ।

( ६ )

क्षमा अतपस्वियों की शोभा है ।  
 गान्धि प्रिय मुनियों व लिंग समाधि में रहना ही शोभाप्रद है ।  
 ज्ञान ध्यान में लगे रहने में गरिब्रवान की शोभा है ।  
 विनय में प्रवृत्ति करना शिष्य की शोभा है ।

( १० )

ब्रह्मचारी विना आभूषण के भी शोभा पाना है ।  
 अपरिग्रही होने में मयमी की शोभा है ।  
 बुद्धिमान होने में राजा के मंत्री की शोभा है ।  
 एक पत्नीयत पालन करने वाला लज्जाशील होकर ही गोभिन  
 हो सकता है ।

( ११ )

अस्मिन् चित्तवाक्ता आप ही अपना शत्रु बन जाता है ।  
 शीलवान् आप ही अपने यश का कारण बन जाता है ।  
 हम से दूर रहने वालों का जीवन अपने लिए दुःखदायी हो  
 जाता है ।  
 चिन्त्रों पर विनय पाने वाला जीवन स्व पर के लिए शरणभूत  
 बन जाता है ।

( १२ )

धर्म काय में कोई और कार्य श्रेष्ठ नहीं है ।  
 प्राणियों की हिंसा से बड़ा कोई पाप नहीं है ।  
 आसक्ति से क्या कोई बचन नहीं है ।  
 सम्बन्ध से उठ कर कोई ऊँचा लाभ नहीं है ।

( १२ )

न मेरियन्ता पमया परक्का,  
 न मेरियन्वा पुरिसा अविज्जा ।  
 न मेरियन्ता अभिमान-हीणा,  
 न सेरियन्वा पिगुणा मणुस्सा ।

( १४ )

जे धम्मिया त खलु सत्रियच्चा,  
 ज पटिया ते खलु पुच्छियन्वा ।  
 ज माट्ठणो त अभियदियन्ता,  
 ज निम्ममा त पडिलाभियन्ता ।

( १५ )

पुत्ता य मीमा य मम विभत्ता,  
 रिमी य देवा य मम विभत्ता ।  
 मुक्खा तिग्गिया य सम विभत्ता,  
 मुया दरिदा य मम विभत्ता ।

( १६ )

मया रुत्ता धम्मरुत्ता जिणोद,  
 मया रुहा धम्मरुहा जिणोद ।  
 मच्च उल धम्मवल जिणोद,  
 मच्च मुह धम्ममुह जिणोद ।

( १३ )

पर स्त्रा का सेवन नहीं करना चाहिए ।  
अनभिष्ट का साथ लाभदायक नहीं होता ।  
अपने गौरव का ध्यान न रखने वाले व्यक्ति की सगति करना  
उचित नहीं है ।  
चुगल जोर में परिचय करना भी बुरा है ।

( १४ )

धर्मनिष्ठ ही सखा सगति करन योग्य है ।  
पहित जन ही पूछ ताछ क योग्य है ।  
साधु पुरुष ही धन्दन करन योग्य है ।  
सुपात्र हा दान देने योग्य है ।

( १५ )

पुत्र और शिष्य एक समान मान गये हैं ।  
मुनि और देवता एक समान माने गये हैं ।  
मूर्ख और पशु एक समान माने गये हैं ।  
मृतक और क्षत्रिज एक समान माने गये हैं ।

( १६ )

धम मसार के ममी कलाविज्ञाना स श्रेष्ठ है ।  
धर्म की कथा समार की सारी कथाया को जीत लेता है ।  
धम का बल सब बलों का सरदार है ।  
धम का सुख सब सुखा को जीत लेता है ।

( १७ )

जुए पमत्तम्म धनम्म नामो,  
 ममे पमत्तस्स दयाड नासो ।  
 मज्जे पमत्तम्म जमस्स नामो,  
 पेमा-पमत्तम्म उलम्म नामो ।

( १८ )

हिमा —पमत्तम्म मुधम्मनासो,  
 चोरी-पमत्तस्स मगीरतामो ।  
 तहा परत्थीसु पमत्तयस्स,  
 मच्चस्स-नामो अहमा गडं य ।

( १९ )

टाण ढरिहस्स पट्टस्स सती,  
 इच्छानिरोहो य सुहोइपस्स ।  
 तात्तण इत्थिनिग्गहो य,  
 चत्तारि ण्याणि मुदुक्कगणि ।

( २० )

असामय जीयिमाहु लोण,  
 धम्म चरे माहु—निणोइइ ।  
 धम्मो य ताण सरण गडं अ,  
 धम्म निमेवित्तु सुह लहति ।

( १३ )

जुआरी का धन नष्ट हो जाता है ।  
मासाहारी को दया नहीं होना ।  
शरानी की कीर्ति नष्ट हो जाती है ।  
गम्यागामी का कुल नष्ट हो जाता है ।

( १४ )

द्रिंसक का धर्म नष्ट हो जाता है ।  
चोर का जीवन नष्ट हो जाता है ।  
पर स्त्री सेवन करण बाल का मथनाश हो जाता है । और  
उसे अधम गति प्राप्त होती है ।

( १६ )

य चारों अत्यन्त दुष्कर हैं —  
निर्गन्तु द्वारा दान देना ।  
सामर्थ्य होने पर क्षमा रखना ।  
सुखी जीवन में शत्रुओं का निगम करना ।  
युवावस्था में पत्नियों का स्मरण करना ।

( २० )

सन्सार में प्राणियों का जीवन अशाश्वत माना गया है ।  
असंलिप्त भगवान् द्वारा बताये गये धर्म का पालन करना चाहिए ।  
धर्म ही रक्षण, शरण और सुदृगति का माता है ।  
प्राणी धर्म का आचरण करके ही सुख प्राप्त कर सकता है ।





